क्या अधिक लोग उद्धार पाएंगे या बहुत कम ही स्वर्ग में
प्रवेश करेंगे?

यह वह प्रश्न है जिसे सदियों से लोग पूछते आए हैं—यहाँ तक कि यीशु के समय में भी।

और आज भी वही प्रश्न हमारे सामने खड़ा है:

क्या उद्धार पाने वालों की संख्या अधिक होगी या कम?

1. यीशु का उत्तर: “क्या केवल थोड़े ही लोग उद्धार पाएंगे?”

लूका 13:23–24 में किसी ने यीशु से पूछा:

“हे प्रभु, क्या थोड़े ही लोग उद्धार पाएंगे?”

यीशु ने सीधा “हाँ” या “नहीं” नहीं कहा। इसके बजाय उन्होंने चेतावनी दी:

“संकरी द्वार से प्रवेश करने का प्रयत्न करो, क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि बहुत से लोग प्रवेश करना चाहेंगे परन्तु वे न कर सकेंगे।” (लूका 13:24, ERV-Hindi)

अर्थ स्पष्ट है:
परमेश्वर के राज्य में प्रवेश अपने आप नहीं होता।
इसमें दिल से प्रयत्न, आज्ञाकारिता, और सच्चा समर्पण चाहिए।

आगे लूका 13:25–27 में यीशु बताते हैं कि कुछ लोग दरवाज़ा बंद होने के बाद अंदर आने की कोशिश करेंगे। वे कहेंगे कि उन्होंने यीशु की बातें सुनीं या धार्मिक कार्यों में रहे, लेकिन प्रभु उनसे कहेंगे:

“मैं तुम्हें नहीं जानता… मुझसे दूर हो जाओ, तुम अधर्म करनेवालो!” (ERV-Hindi)

यह स्पष्ट करता है:
सिर्फ यीशु को जानना पर्याप्त नहीं है—उद्धार के लिए उसकी आज्ञा का पालन जरूरी है।

2. संकरी राह और चौड़ी राह

मत्ती 7:13–14 में यीशु बहुत साफ़ कहते हैं:

“संकरी फाटक से भीतर प्रवेश करो…
क्योंकि जीवन को पहुँचानेवाला फाटक छोटा है और मार्ग संकरा
है, और उसे पानेवाले थोड़े हैं।” (ERV-Hindi)

यीशु दो रास्तों का चित्र खींचते हैं:

चौड़ी राह — आसान, लोकप्रिय, मन मुताबिक… पर यह विनाश की ओर ले जाती है।
संकरी राह — कठिन, अलोकप्रिय, आत्म-त्याग वाली… पर यह जीवन देती है।

उद्धार अनुग्रह से विश्वास द्वारा मिलता है (इफिसियों 2:8–9), लेकिन सच्चा विश्वास हमेशा बदले हुए जीवन का परिणाम होता है—पश्चाताप, पवित्रता और आज्ञाकारिता के साथ
(याकूब 2:17; इब्रानियों 12:14)।

3. आज यह संकरी राह और भी कठिन क्यों हो गई है?

यीशु ने कहा कि थोड़े ही लोग जीवन के मार्ग को पाते हैं।
आज यह और कठिन क्यों दिखती है?

क्योंकि यह रास्ता दुनिया की चीज़ों से ढका पड़ा है:

धन-प्रेम और लालच – 1 तीमुथियुस 6:10
व्यभिचार और शारीरिक लालसाएँ – गलातियों 5:19–21
घमंड, ईर्ष्या, कलह – याकूब 3:16
दुनियावी मनोरंजन और आकर्षण – 1 यूहन्ना 2:15–17
झूठे शिक्षक और झूठे भविष्यद्वक्ता – 2 पतरस 2:1–2; मत्ती 24:11

आज कई चर्च सच्चे सुसमाचार के स्थान पर समृद्धि, सफलता और आराम को बढ़ावा दे रहे हैं।

2 तीमुथियुस 4:3–4 इसकी भविष्यवाणी करता है:

“लोग सही शिक्षाओं को न सहेंगे… वे सत्य से मुँह मोड़ लेंगे
और कल्पित बातों के पीछे हो लेंगे।” (ERV-Hindi)

इसी कारण संकरी राह ढूँढना और भी कठिन होता जा रहा है।

4. यीशु की चेतावनी: नूह और लूत के दिनों जैसी स्थिति

यीशु ने बताया कि उनके आने से पहले के दिन
नूह और लूत के दिनों जैसे होंगे (लूका 17:26–30)।

उन दिनों कितने लोग बच पाए?

नूह के समय सिर्फ 8 लोग बच पाए (1 पतरस 3:20)
लूत के समय केवल लूत और उसकी दो बेटियाँ (उत्पत्ति 19:15–26)

बहुतों को चेतावनी दी गई—परन्तु बहुत कम ने प्रतिक्रिया दी।

यीशु कहते हैं कि अंतिम पीढ़ी भी ऐसी ही होगी।
मत्ती 24:37–39 यही दोहराता है:

“जैसा नूह के दिनों में था, वैसा ही मनुष्य के पुत्र के आने पर भी होगा।” (ERV-Hindi)

बहुत लोग व्यस्त, उदासीन, या धोखे में रहेंगे—और केवल कुछ ही तैयार होंगे।

5. इसका आज हम पर क्या प्रभाव पड़ता है?

इसका अर्थ यह नहीं कि उद्धार सीमित है।
अर्थ यह है कि बहुत कम लोग इसकी कीमत चुकाने के लिए तैयार होंगे।

हमें अपने दिल की जाँच करनी चाहिए:

क्या मैं सच्चे सुसमाचार का पालन कर रहा हूँ या आरामदायक सुसमाचार का?
क्या मैं पवित्रता चुनता हूँ या केवल धार्मिक दिखावा?
क्या मेरा जीवन परमेश्वर को प्रसन्न करता है या दुनिया को?

इब्रानियों 12:14:

“पवित्रता का पीछा करो, जिसके बिना कोई भी प्रभु को नहीं देख सकेगा।” (ERV-Hindi)

मरकुस 8:36:

“यदि मनुष्य सारे संसार को प्राप्त कर ले पर अपनी आत्मा को
खो दे, तो उसे क्या लाभ?” (ERV-Hindi)

हम अंत समय में जी रहे हैं।
यीशु आ रहा है।
तैयार होने का समय आज है।

6. सच्चे मसीही जीवन की पुकार

सच्चा मसीही जीवन फैशन, लोकप्रियता या धन के बारे में नहीं है। यह एक ऐसे जीवन के बारे में है जो पूरी तरह यीशु को समर्पित है।

मसीही स्त्री शालीनता में चले — 1 तीमुथियुस 2:9–10
मसीही पुरुष धर्म और भक्ति में चले — 1 तीमुथियुस 6:11
सभी विश्वासियों को पाप और दुनियादारी को त्यागना चाहिए — रोमियों 12:1–2

हमें प्रेरितों के सुसमाचार पर लौटने की आवश्यकता है—
जो सत्य, पश्चाताप और पवित्रता पर आधारित था।

प्रकाशितवाक्य 3:20:

“देखो, मैं द्वार पर खड़ा खटखटा रहा हूँ…” (ERV-Hindi)

आइए हम उन कुछ में शामिल हों जो उसके बुलावे का उत्तर देते हैं।

दुनिया संकरी राह का मज़ाक उड़ाएगी—

लेकिन जीवन उसी राह पर है।

यीशु ने स्पष्ट कहा:
बहुत कम लोग बचेंगे, क्योंकि बहुत कम लोग उसका अनुसरण करने की कीमत चुकाना चाहते हैं।

इसलिए:

सत्य में चलें,
पवित्रता में जिएँ,
और उसके आगमन के लिए तैयार रहें।

मत्ती 24:44:

“तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस घड़ी तुम सोचते नहीं, उस घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जाएगा।” (ERV-Hindi)

परमेश्वर हमें संकरी राह पर दृढ़ता से चलने की अनुग्रह दे। आमीन।

आशीषित रहें।

□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□
□□□□□□ □□□□□□?

Share on:
WhatsApp

Print this post